eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 08, Special Issue 02, May 2025

पंडिता क्षमाराव प्रणीत सत्याग्रहगीता महाकाव्य के संदर्भ में लोक संस्कृति एवं राष्ट्रीय एकता

किरंता बाई मीना[1]

[1]शोध छात्रा (संस्कृत), राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय सिरसागंज फिरोजाबाद

Received: 05 April 2025, Accepted: 20 April 2025, Published online: 01 May 2025

Abstract

इस शोध का उद्देश्य आधुनिक समय में लोक संस्कृति एवं राष्ट्रीय एकता को संरक्षण प्रदान करना एवं वर्तमान समय में हमारी जो संस्कृति शनैः शनै धूमिल होती जा रही है उसके प्रति जनमानस को सजग करना है। यह शोध पत्र इस बात पर चर्चा करने की कोशिश करता है कि किसी देश की शिक्षा प्रणाली अपने देशवासियों में राष्ट्रवाद कैसे पैदा कर सकती है साथ ही लोक संस्कृति को किस प्रकार से और अधिक प्रसिद्धि एवं संरक्षण प्रदान कर सकती है। लोक शब्द का अर्थ बहुत व्यापक है। लोक एक ऐसी अवधारणा है जिसकी कुछ निजी परंपराएं होती हैं। संस्कृति सामाजिक परंपरा से प्राप्त चिंतन अनुभव और व्यवहार की समस्त रीतियों का समावेश लोक में दिखाई देता है। लोक संस्कृति मानव के विविध क्रिया कलापों, परंपराओं, रीति-रिवाजों, विचारों, आस्था , विश्वासों और संस्कारो आदि की सामूहिक अभिव्यक्ति है। लोक संस्कृति के अन्तर्गत जनजीवन से सम्बंधित सभी आचार विचार, रहन-सहन, विधि-निषेध, प्रथा परम्परा, धर्म कर्म, पूजा पाठ) खान-पान) वेशभूषा और यज- अनुष्ठान आदि आते है। जबकि राष्ट्रीय एकता का अर्थ राष्ट्र की विभिन्न इकाइयों के एक साथ मिल-जुलकर सौहार्दपूर्ण ढंग से राष्ट्रहित में कार्य करना है। साम्प्रदायिकता, जातीयता, क्षेत्रीयता, धार्मिकता या भाषायी उन्मादो से अलग हटकर राष्ट्रीय दृष्टिकोण से कार्य करना ही राष्ट्रीय एकता है। राष्ट्रीय एकता मोतियों के समान है जो विभिन्न मानको को एक साथ बांधकर रखती है।

बीज शब्द- लोक संस्कृति, साम्प्रदायिकता, जातीयता, क्षेत्रीयता, राष्ट्रीय एकता

Introduction

लोक शब्द संस्कृत के लोक दर्शन धातु में घत्र प्रत्यय लगाने पर निष्पन्न हुआ है। इस धातु का अर्थ देखना होता है। इस प्रकार लोक शब्द का अर्थ देखने वाला हुआ। वह समस्त जनसमुदाय जो दृष्टि-निक्षेप रूप कार्य को सम्पन्न करता है। लोक शब्द से ही हिन्दी के लोग शब्द की व्युत्पत्ति मानी जाती है। जिसका तात्पर्य सर्वसाधारण जनता से है। अतः लोक शब्द का अभिप्राय उस समस्त जनसमूह से है जो किसी देश में निवास करता है।

परन्तु हजारी प्रसाद द्विवेदी के कथनानुसार लोक शब्द का अर्थ ग्राम्य या जनपद नहीं है बल्कि नगरों और गांवों में रहने वाली संपूर्ण जनता से है जिनके व्यावहारिक जान का आधार पोतिया नहीं है।

वासुदेवशरण अग्रवाल लोक के विषय में कहते है- लोक हमारे जीवन का महा समुद्र है जिसमें भूत भविष्य वर्तमान सभी कुछ संचित रहता है। यह राष्ट्र का अमर स्वरूप है।

अंग्रेजी में लोक का पर्याय FOLK शब्द माना जाता है। वास्तव में FOLK' शब्द आदिम जाति के उन सभी सदस्यों का बोधक है जिनसे वह समुदाय निर्मित हुआ है।

'संस्कृति' का अर्थ- 'संस्कृति' शब्द 'सम्' उपसर्ग पूर्वक 'कृ' धातु से निष्पन्न होता है। यह परिस्कृत अथवा परिमार्जित करने के भाव सूचक है। संस्कृति शब्द मनुष्य की सहज प्रवृत्तियों, नैसर्गिक शक्तियों तथा उनके परिष्कार का धर्धातक है। यह व्यक्ति की

मानसिक तथा बौद्धिक गतिविधियों, समाज के आचार-विचार, उन्नति-अवनति, रीति-रिवाज, धार्मिक, राजनैतिक एवं सामाजिक अवस्थाओं और परंपराओं का परिचायक है।

अंग्रेजी में संस्कृति के लिए 'कल्चर' शब्द का प्रयोग किया जाता है। 'कल्चर' शब्द एग्रीकल्चर अथवा हार्टीकल्चर शब्द का एक अंश है। कल्चर शब्द की सिद्धि लैटिन भाषा के कोलरे धातु से हुई है। इस प्रकार आत्मिक शक्तियों का सर्वांगीण विकास करने वाली प्रक्रिया विशेष का नाम 'संस्कृति' है। समाज शास्त्री एफ. जे. ब्राउन का कथन है- संस्कृति मानव के सम्पूर्ण व्यवहार का एक ढांचा है जो अंशतः भौतिक पर्यावरण से प्रभावित होता है।

एडवर्ड बी. टायलर का मत है कि संस्कृति जान, विश्वास, कला, नैतिकता, न्याय, रीति-रिवाज तथा अन्य क्षमताएं या आदतें जो मनुष्य द्वारा समाज का सदस्य होने के नाते अर्जित की जाती है इन सबका एक समिश्रण है। इस परिभाषा में संस्कृति के प्रमुख तत्वों तथा उनके मिश्रित संबंधों का उल्लेख है।

जबकि राष्ट्रीय एकता को देखे तो किसी भी राष्ट्र के नागरिकों में विविधताओं तथा विभिन्नताओं का होना स्वाभाविक ही है। संभवतः विश्व में कोई ऐसा राष्ट्र नहीं होगा जहां के समस्त नागरिक एक जैसे हो नागरिकों में जातीय, धार्मिक, सांस्कृतिक, भाषायी या आर्थिक विभिन्नताओं का होना स्वाभाविक है।

राष्ट्रीय एकता का अर्थ- राष्ट्रीय एकता से अभिप्राय राष्ट्र की सभी इकाइयों राज्यों, धर्मों, जातियों, सम्प्रदार्या या नागरिकों के साथ मिल-जुलकर राष्ट्र हित करने से है। जब राष्ट्र के सभी नागरिक किसी राज्य, धर्म, जाति, सम्प्रदाय विशेष के हितों को त्यागकर संम्पूर्ण राष्ट्र के हितों को दृष्टि में रखकर सोचते हैं तथा कार्य करते हैं। तब देश में राष्ट्रीय एकता की स्थिति का निर्माण होता है। दूसरे शब्दों में राष्ट्रीय एकता राष्ट्र के नागरिकों की ऐसी मानसिक व व्यवहारिक स्थिति है जिसमें राष्ट्रीय एकता का अर्थ राष्ट्र के विभिन्न तत्वों को समाप्त करना नहीं है, राष्ट्रीय एकता में एक भाषा, एक धर्म, एक संप्रदाय, एक जाति, एक संस्कृति लाने का कोई प्रस्ताव नहीं होता है, वरन साम्प्रदायिकता, धार्मिकता, प्रांतीयता, जातीयता भाषा संबंधी उन्मादों से मुक्त होकर राष्ट्रीय दृष्टिकोण से कार्य करने की भावना को प्रोत्साहित करना है। राष्ट्रीय एकता की स्थिति में प्रांत, धर्म, सम्प्रदाय, जाति या भाषा की अपेक्षा राष्ट्र अधिक महत्वपूर्ण होता है। तथा व्यक्ति सम्पूर्ण राष्ट्र के कल्याण के लिए प्रांत, धर्म, सम्पदाय, जाति या आषा के हित का बलिदान करने के लिए तत्पर रहते हैं। राष्ट्रीय एकता में विभिन्नता एवं विविधताएं होते हुए भी एकता का सूत्र होता है जो सभी को बांधे रहता है तथा राष्ट्रीय विकास में सहायक सिद्ध होता है।

लोक संस्कृति के उद्देश्य-

1. लोक संस्कृति को संरक्षित करना और बढ़ावा देना

7. लोक संस्कृति से जुड़ी कलाओं को सरक्षित करना और उनका प्रचार करना।

लोक संस्कृति से जुडे साहित्य को संरक्षित करना और उनका प्रचार करना।

लोक संस्कृति से जुड़े विश्वासों, परम्पराओं और रीति-रिकों व सांस्कृतिक केन्द्रों में कलाकारों को प्रोत्साहित करना।

5. लोक संस्कृति से जुड़े कलाकारों और कला संगठनों को सहायता देना।

राष्ट्रीय एकता के उद्देश्य

1. सभी छात्रों को या सभी लोगों को देश के विभिन्न पहलुओं का ज्ञान कराना।
2. छात्रों को स्वतंत्रा प्राप्ति से संबंधित बातों से विशेष रूप से परिचित कराना।

3. राष्ट्रीय एकता के विकास के लिए सभी जातियों, सम्प्रदायी और राज्यों में अधिक मेल उत्पन्न करने वाली शिक्षा को प्रोत्साहित करना।
4. समाज को गुमराह करने वाले तत्वों, क्षेत्रीय विवेश और सांप्रदायिक दुर्भावना को हतोत्साहित करना।
5. देश के सभी नागरिकों के लिए सामाजिक स्थिरता, शांति और समावेशी विकास व राष्ट्रीय जीवन स्तर को बढ़ाना।

लोक संस्कृति की आवश्यकता

1. लोक संस्कृति को समझने से हमें समाज की मान्यताएं, अंधविश्वास, त्योहार, रीति-रिवाज, गीत गाथा, किस्से कहानियाँ, कहावतै, मुहावरे आदि का पता लगता है।

2. लोक संस्कृति में मौजूद मान्यताओं, विश्वासों और रीति-रिवाजों को आगे बढ़ाने के लिए।

3.लोक संस्कृति में श्रद्धा भक्ति की प्राथमिकता को देखने के लिए।

4.लोक संस्कृति से हमें विभिन्न समाजर्जी के रोजमर्रा के जीवन की झलक देखने को मिलती है

5. लोक संस्कृति को संजोना और आगे की पीढ़ी को हस्तांतरित करना मेरे शोध का एक सच्चा कर्म और साहित्यिक सेवा है।

राष्ट्रीय एकता राष्ट्रीय की आवश्यकता

1. राष्ट्रीय एकता देश की एकता, अखंडता और समद्धि के लिए आवश्यक है।

2. राष्ट्रीय एकता से देश के नागरिकों में सहयोग, भाईचारा और सामूहिक प्रयासों का आव बढ़ता है।

3. यह देश के विभिन्न समुदायों, धर्मी, भाषाओं और संस्कृति के बीच आपसी सम्मान की भावना को बढ़ावा देने के लिए।

4. राष्ट्रीय एकता सभी को समान अवसर और अधिकार प्रदान करती है और समाज में न्याय को सुनिश्चित करने के लिए।

5. राष्ट्रीय एकता देश की आत्मनिर्भरता और सुरक्षा का आधार है।

लोकसंस्कृति की विशेषताएं

1. लोकसंस्कृति मनुष्य द्वारा अर्जित होती है।

2. लोक संस्कृति अगतिशील होती है।

3.यह एक धरोहर है जो आदिकाल से आज तक चलती आ रही है।

4.मनुष्य तथा समाज के बीच यह स्थायी रूप से विद्यमान रहती है।

5. लोक संस्कृक्ति अपरिवर्तनशील होती है।

राष्ट्रीय एकता की विशेषताएं

1. राष्ट्रीय एकला का मकसद, लोगों के बीच एकता और भाइचारे की भावना पैदा करना है।

2. यह जाति, पंथ, धर्म या लिंग की परवाह किए बिना लोगों के बीच बंधन और एकजुटता है।

3. राष्ट्रीय एकता लोगों के बीच सामाजिक- सांस्कृतिक असमानताओं के अन्तर की कम करती है।

4. राष्ट्रीय एकता लोगों को अपने भावनात्मक बंधन को बढ़ाने के लिए अपने विचारों, मूल्यों और अन्य मुद्दों को साझा करने के लिए प्रोत्साहित करती है।

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 08, Special Issue 02, May 2025

5. यह लोगों को विविधता के भीतर एकता को महसूस करने और जीवन जीने व हमारी राष्ट्रीय पहचान को सर्वोच्च शक्ति बनाने का प्रयास करती है।

राष्ट्रीय एकता में लोक संस्कृति की भूमिका

राष्ट्रीय राज्य के निर्माण में लोक संस्कृति की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यह संस्कृति एक समाज की पहचान और एकता को दशर्शाती है। लोक संस्कृति के माध्यम से विभिन्न समुदायों के बीच आपसी संबंध और सहयोग बढ़ता है जो कि एक मजबूत राष्ट्र के निर्माण में सहायक होता है। इसके अलावा लोक संस्कृति से प्राप्त मूल्य और परम्पराएँ राष्ट्रीयता की भावना को प्रबल करती है। इस प्रकार लोक संस्कृति राष्ट्रीय राज्य के निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है जो एकता, पहचान और सहयोग को बढ़ावा देती है।

निष्कर्ष - लोक संस्कृति और समाज का घनिष्ठ संबंध है। यह तो सम्भव है कि संस्कृति किसी व्यक्ति विशेष से अपना संबंध ना रखे किंतु यह असंभव है कि वह किसी जाति या समाज विशेष से अपना संबंध ही विच्छेद कर ले। लोक संस्कृति व राष्ट्रीय एकता दोनों का ही विकास सामूहिक प्रयत्नों से होता हैं। लोकसंस्कृति और राष्ट्रीय एकता एक दूसरे के पूरक है और पूर्ति भी। इस प्रकार आगे आने वाली संस्कृति इसके विकास में निरन्तर प्रयत्नशील रहती है। राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय एकता परिषद की स्थापना प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने सितम्बर-अक्टूबर 1961 में की थी।

भारत में राष्ट्रीय एकता के जनक सरदार वल्लभ भाई पटेल को माना जाता है। इसी लिए सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती के दिन ही 31 अक्टूबर को हर वर्ष राष्ट्रीय एकता दिवस मनाया जाता है। "पण्डिला क्षमाराव प्रणीत सत्याग्रहगीता महाकाव्य में भी. गांधीजी के लोक संस्कृति व राष्ट्रीय एकता के प्रति दृष्टिकोण को बताया है महात्मा गांधी एक अद्वितीय राष्ट्रीय व्यक्तित्व थे वह एक भविष्यवक्ता, एक धर्म सुधारक, एक समाज सुधारक और राष्ट्रवादी विचारक थे जिसने भारतीय स्वतंत्रता के लिए अतुलनीय संघर्ष किये। भारत के इस सन्त ने सत्य और अहिंसा के परम अस्त्र लेकर जीवन पर्यन्त ब्रिटिश साम्राज्यवाद की जड़ो पर प्रहार किया। सत्याग्रहगीला महाकाव्य लोक संस्कृति व राष्ट्रीय एकता को सत्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन - रामकिशोर त्यागी, ब्लू स्टार, नई दिल्ली

2. सिद्धान्त कौमुदी वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई. पृष्ठ - 417

3. भारतीय संस्कृति में लोकजीवन ही अभिव्यक्ति, सम्मेलन पत्रिका (संपा) श्री रामनाथ सुमन (प्रयागः सम्मेलन मुद्रणालय, 1973) (पृष्ठ- 20

4. हिन्दू संस्कृति अंक, कल्याण, पृष्ठ-70

5. साहित्य की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, प्रेमदत्त शर्मा, जयपुर पुस्तक सदन, 1968 पृष्ठ-4

6. भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन एवं भारतीय गणतन्त्र का संविधान लक्ष्मीनारायण अग्रवाल आगरा

7. चतुर्वेदी, दिनेशचन्द, भारत का आन्दोलन, मीनाक्षी प्रकाशन, नई दिल्ली।

8. भारत की राष्ट्रीय एकता डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी प्रभात प्रकाशन (1) जनवरी 2011) पृष्ठ-106